Annexure - VIII

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BHAHADUR SHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI-110002

PROFORMA FOR SUBMISSION OF INFORMATION AT THE TIME OF SENDING THE FINAL REPORT OF WORK DONE ON THE PROJECT

1.NAME AND ADDRESS OF THE PRINCIPAL INVESTIGATOR: DR. BHAGWATI PRASAD UPADHYAY

2. NAME AND ADDRESS OF THE INSTITUTION:

L.J.N.J. MAHILA MAHAVIDYALAYA
PARANJAPE 'B' SCHEME,
ROAD NO. 1,
VILE PARLE (EAST),
MUMBAI 400057

3. UGC APPROVAL NO AND DATE: F-23-157/06

4. DATE OF IMPLEMENTATION: 1st December 2006

5. TENURE OF THE PROJECT: One Year, 6 Months

6. TOTAL GRANT ALLOCATED: Rs. 60,000/-

7. TOTAL GRANT RECEIVED: Rs. 40,000/-

8. FINAL EXPENDITURE: RS.

9. TITLE OF THE PROJECT: "राजभाषा हिंदी को त्यावहारिक बनाने में भारतीय सेनाओं की विशेष भूमिका (भारतीय नौसेना के विशेष संदर्भ में)"

10. OBJECTIVES OF THE PROJECTS:

प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प का उद्देश्य इतस प्रकार है –

- भारतीय सशस्त्र सेनाओं के विभिन्न पदों (रेंकों) का परिचय देना ।
- पाठकों को राजभाषा के संवैधानिक पक्ष से परिचित करावा ।

- राजभाषा नीति को व्यहृत रूप देणे में भारतीय नौसेना द्वारा राजभाषा नियमों तथा अधिनियमों के अनुपालन संबंधी प्रयासों पर प्रकाश डालना ।
- राजभाषा हिंदी के विकास के लिए भारतीय नौसेना की सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं को रेखांकित करना ।
- ीहिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु भारतीय नौसेना के कुछ रोचक प्रयासों की जानकारी देना ।
- भारतीय नौसेना के प्रशिक्षण केंद्रों, युध्दपातों तथा युनिटों में की जाने वाली विविध शैक्षणिक तथा भाषिक गतिविधियों से सियिल सोसायटी को परिचित कराना ।
- स्ेना तथा सिविल समाज के बीच नवीन शैक्षणिक तथा भाषिक सेतु का निर्माण कराना
- नई पिढी को सैन्य सेवा की जानकारी देना ।
- नई पिढी को सैन्य सेवा-सेवा से जुडने की प्रेरणा प्रदान करना ।
- नई पिढी को राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित करना ।

11. WHETHER OBJECTIVES WERE ACHIEVED:

(GIVE DETAILS) **उद्देश्य की पूर्ति :**

यद्यपि भारतीय सशस़ सेनाओं की सभी युनिटों मे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य तो बहुत हो रहा हैं परंतु इस कार्य को मैंने एक बिखरी हुई सामग्री के रूप में पाया है। अत: राजभाषा हिंदी संबंधी इस बिखरी हुई सामग्री को एक क्रमबध्द तथा सुव्यवस्थित तरीके से एकत्र करने की जरूरत हैं जिससे एक ठोस दस्तावेज के रूप में भारतीय सशस्त्र सेनाओं की राजभाषा संबंधी इस पहल और भूमिका को भली-भांति समझा जा सकें । साथ ही भारतीय सशस्त्र सेनाओं की विशेषकर भारतीय नौसेना द्वारा राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक बनाने की इस प्रक्रिया को नागरिक प्रशासन के समक्ष लाया जा सके ।

अस्तु, प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प 'राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक बनाने में भारतीय सेनाओं की भूंमिका' (भारतीय नौसेना की विशेष संदर्भ में) भारतीय सशस्त्र सेना विशेषकर भारतीय नौसेना द्वारा किए गए राजभाषा संबंधी कार्य के अनछुए पक्ष के विवेचन एवं मूल्यांकन की दिशा में एक विनम्र प्रयास हैं।

12. ACHIEVEMENTS FROM THE PROJECT:

'राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक बनाने में भारतीय सेनाओं की भूमिका' (भारतीय नौसेना की विशेष संदर्भ में) शीर्षक का अनुशीलन करने के उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि जिस खडी-बोली को आज हम लिखते, पढते, सुनते और बोलते है उसका संबंध कहीं-न-कहीं सेना या सेना की छावनी के साथ अवश्य रहा है।

यदि हम इतिहास के पन्नों को उलट कर देखें तो हमें यह ज्ञात होता है कि खडी बोली का जन्म मेरठ-अलीगढ के आसपास के क्षेत्रों मे हुआ था । अब चूँकि मेरठ में ब्रिटिश काल से ही सेना बहुत पुरानी छावनी भरी अत: इस खडी बोली हिंदी का संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सेना के साथ अवश्य रहा है।

सम्भवत: जब प्रचलित पडी बोली के विरूध्द खडी बोली का जन्म हुआ तब खडी बोली बोलने वाले मेरठ छावनी तथा आसपास के अधिकांश लोग सैन्य सेवा अथवा सैन्य परिवारों से जुडें हुए थे । अब चूँकि सेना में विभिन्न प्रान्तों के अहिंदी भाषी लोग सेवारत थे अताएव अन सबको ऐसी उभयनिष्ठ भाषा की आवश्यकता पडी जिसे सभी प्रांतो के अहिंदी भाषी लोग आसानी से समक्ष सकें । इस प्रकार तत्कालीन प्रचलित पडी बोली के समानान्तर खडी बोली का जन्म हुआ । अत: यह कहा जा सकता है कि हिंदी खडी बोली का सेना के साथ श्एक ऐतिहासिक संबंध रहा है।

इसके साथ ही भारतवर्ष के स्वतंत्रता-संग्राम में अनेकानेक राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदी का इस्तेमाल किया । इन सभी नेताओं ने स्वतंत्रता संघर्ष में संगठित होने के लिए हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाया । महात्मा गांधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजत राय, महामना मदनमोहन मालवीय, राजर्षि पुरोत्तमदास ठण्डन, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, काका कालेलकर, बिपिनचंद्र पाल, सेठ, गोविंद दास, सुभाषचंद्र बोल आदि सभी ने हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा इस भाषा के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

दरअसल, सन् १८८५ में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई तब स्वतंत्रता, स्वदेशी तथा स्वभाषा जैसे शब्दों के साथ भारतीयों ने विदेशी लोगों, विदेशी वेश-भूषा तथा विदेशी भाषा आदि का संपूर्ण बहिष्कार किया । ऐसे में उस काल के राष्ट्रीय नेताओं, समाज सुधारकों तथा शिक्षविदों के साथ साहित्यकारों ने भी स्वभाषा के लिए हिंदी को ही एक सही विकल्प के रूप में स्वीकार किया ।

भारतेब्दु हरिश्चंद्र ने तो स्वभाषा को सभी कष्टों की औषधि करार दिया –

‘ निज भाषा उन्नति अहैं, सब भाषा को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान कें, मिटे न हिय को सूल ।।’

13. SUMMARY OF THE FINDINGS: (IN 500 WORDS)

भारतीय सशस्त्र सेनाऐं अपने शौर्य तथा पराक्रम के लिए विश्व दिख्यात है। अपने अदम्य साहस, कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के कारण भारतीय सशस्त्र सेनाएं विश्व की सबसे उत्कृष्ट सेनाओं में से एक है ।

प्रारम्भ से ही भारतीय सशस्त्र सेनाओं का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। भारतीय प्राचीन परम्परा में युध्द को कला का दर्जा दिया गया है । भारतीय सेनाएं अपने रण कौशल से प्रतिद्वन्दी सेना को युध्द के हर क्षेत्र में परास्त करने में सक्षम रही हैं। इस संदर्भ में बांग्लादेश के निर्माण का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है ।

सन् १९७१ में भारतीय सशस्त्र सेनाओं ने प्रतिद्वन्द्वी सेना के १० हजार से अधिक सैनिकों को पटखनी देकर उन्हें आत्मसमर्षण के लिए विवश कर दिया था। इतनी अधिक संख्या में किसी भी देश की सेना को हथियार डालने के लिए मजबूर करना भारतीय सेनाओं के लिए एक महान उपलब्धि तथा अपने आप में एक विश्वकीर्तिमान है।

दरअसल हुआ यूं क, वर्ष १९७१ में जब जनरल एस. एच. एफ. जे. मानिक शॉ भारतीय थल सेना के अध्यक्ष थे तब लेफ्टिनेंट जबरल अरोडा के समक्ष पाकिस्तानी सेना के ले. ज. नियाजी ने दि. १६ दिसंबर को ढाका विश्वविद्यालय में अपनी पिस्तोंल लेफ्टिनेंट जनरल अरोडा को सौंपकर आत्मसमर्पण किया था । भारतीय सशस्त्र सेनाएं अपनी इस उपलब्धि को विजय दिवस के रूप में मनाती है ।

इस प्रकार भारतीय सशस्त्र सेनाएं अपने तीन प्रमुख अंगो के साथ एक साझे उद्देश्य के लिए कार्य करती है। ये तीन अंग भारतीय थल सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना के रूप में जाने जाते है।

भारतीय थल सेना का मुख्य कार्य देश की स्थल सीमाओं की रक्षा करना हैं। भारतीय स्थल सेना विषम भौगोलिक परिस्थितीयों में रहते हुए भारतीय उपमहाद्वीप की सुरक्षा

तथा संरक्षण करती है । थल सेना के अनुशासित सैनिक कमी लेह-लद्दाख के बर्फीले वातावरण में शून्य से ३५ डिग्री कम तापमान में कार्य करते है, तो कमी राजस्थान के मरूस्थल में ४५ डिग्री से अधिक तापमान में।

जबकि भारतीय नौसेना भारतीय उपमहाद्वीप की सुदीर्घ सीमा की सुरक्षा का उत्तरदायित्व वहन करती है। नौसेना पूर्व में सुवर्ण रेखा नदी से लेकर पश्चिम में खम्भात की खाडी तक फैली समुद्री सीमा की रक्षा करती है। भारतीय नौसेना को बंगाल की खाडी, हिंदी महासागर, अरब सागर तथा अण्डमान-निकोबार द्वीप सागर की अतल महराइयों में कार्य करना पडता है। समुदी तुफान तथा ज्वार-भाटा आदि विषम भौगोलिक परिस्थितियों का सामना करते हुए भारतीय नौसेना अपने राष्ट्रीय उत्तरदायित्यों का निर्वाह करती है।

साथ ही भारतीय वायुसेना भारत वर्ष की बृहत् हवाई सीमा की सुरक्षा का उत्तरदायित्व वहन करती है । विश्व की सबसे ऊंची-ऊंची पर्वत श्रंखलाओं के ऊपर उडांन भरती है । इस प्रकार वायुसेना बडी मुस्तैदी से सदैव राष्ट्र की हवाई सुरक्षा में लगी रहती है।

जहां तक भारतीय सशस्त्र सेनाओं की वेष-भूषा का प्रश्न है आमतौर पर थल सेना के रणबांकुरे आलिव ग्रीन कलर की वर्दी पहनते है। जबकि नौसेना के बीर दूधिया सफेद वर्दी और वायुसेना के जांबाज आसमानी रंग की वर्दी पहनते है।

परंतु इन सेनाओं मे प्रशिक्षण, युध्दाभ्यास, राष्ट्रीय पर्वो तथा विशेष समारोहों पर आवश्यकतानुसार अनेकानेक रंग की पोशाकें पहनने का भी प्रचलन है।

भारतीय थल सेना आज अनेक प्रकार के अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित है। थल सेना मे बख्तबंद शाडियां, तोपें, टैंक्स, भिसाईल वाहन गाडियां, रडार, राकेट लांचर, मोर्टार लांचर्स, नाइट विजन कॅमरायुक्त गाडियां, धरती-से-धरी तथा धरती-से-आकाश तक मारक क्षमता के हथियारों के साथ-साथ अनेक प्रकार की स्वचालित राइफलें/उपस्कर आदि उपलब्ध हैं ।

भारतीय नौसना में अनेक प्रकार के युध्दपोतों, विमानवाहन पोतों, पनडुब्बियों के साथ-साथ हल्के वायुयानों को सम्मिलित किया गया है । दरअसल नौसेना समुंद्रं के भीतर, समुंद्र की ऊपरी सतह पर और समुंद्र के ऊपर हवा में तीन स्तरों पर अपने प्रतिद्वन्दद्वी से लोहा लेती है। यही कारण है कि भारतीय नौसेना को त्रिआयामी सेवा (THREE DIMENTIONAL SERVICE) कहा जाता है।

भारतीय वायुसेना में अनेक प्रकार के अत्याधुनिक बम वर्षको, हवाई जहाजों, मिसाईल वर्षकों, मालवाहक हवाई जहाजों तथा टोही विमानों को शामिल किया गया है । वायुसेना में तकनीकी तथा गैर तकनीही (जनरल डयूटी) दो प्रकार रेल तथा वायु दुर्घटना में भी भारतीय सेनाएं नि:स्वार्थ भाव से समाज सेवा का कार्य करती है।

अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का पालन करते हुए आम लोगों मे स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता लाने, वृक्षारोपण करने, पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण, समुद्र तटों के रक्षरखाव आदि का सेवा-कार्य बडे मनोयोग से करती है। उपर्युक्त संदर्भ ऐसे है जिनसे नागरिक प्रशासन सैन्य सहायता से प्रत्यक्षरूप से लाभान्वित होता दिखाई देता है । इसके अतिरिक्त भारतीय सेनाएं कुछ ऐसे क्षेत्रोंमें भी कार्य करती है जिस ओर आम जनता का ध्यान कम ही जाता है।

आजकाल सेना की युनिटों में कई प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम चल रहे है। इन कार्यक्रमों मे सैनिको को सैन्य सेवा के साथ-साथ तथा तकनीही शिक्षा प्रदान करने की समुचित व्यवस्था की गई है। स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगांठ पर रक्षा मंत्रालय ने सैनिकों द्वारा सैन्य सेवा के साथ-साथ एम.एड., एम.फिल. तथा पी.एच.डी. जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर प्रोत्साहन योजना लागू की है। इसके अतिरिक्त भारतीय सेनाएँ राजभाषा आयोग, संसदीय राजभाषा समिति और राजभाषा नियमों, अधिनियमों का पालन बडी शिद्दत के साथ कर रही है। भारतीय सशस्त्र सेनाओं के कार्यालयीन पत्र व्यवहार में अब काफी हद तक हिंदी का प्रयोग होने लगा है। सेना के भर्ती के शिबिर लगाए जाते है तथा भर्ती के लिए रैलियां आयोजित की जाती है, वहा भी बैनरों आदि में हिंदी का प्रचलन बढ रहा है। इस तरह सेना की भर्ती, प्रशिक्षण, परेड, खेलकूद तथा अन्य अनिवाग्र क्रियाकलापों में हिंदी को महत्व दिया जा रहा है।

इन सबके साथ भारतीय सशस्त्र सेना की यूनिटों मे दैनिक आदेश सप्ताह में कम-से-कम एक बार अवश्य हिंदी में प्रकाशित होते है। सैनिकों की वर्दियों मे नाम-पट्टी अब हिंदी में लिखी दिखाई पडती है। हिंदी को बढावा देने के उद्देश्य से सेना की यूनिटों मे वर्ष दो बार हिंदी कार्यशालाएं तथा एक बार हिंदी दिवस के अनेक कार्यक्रम आयोजित होते है ।

अब चूंकि महामहिम आदरणीय राष्ट्रपति महादेय संवैधानिक प्रमुख के साथ ही भारतीय सशस्त्र सेनाओं के 'सुप्रीम कमाण्डर' भी होते है अताएव राष्ट्रपति के राजभाषा संबंधी आदेशों का पालन सेना में बडे अनुशासित ढंग से होता है।

जहां तक 'राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक बनाने में भारतीय सेनाओं की भूमिका' (भारतीय नौसेना के विशेष संदर्भ में) शीर्षक को लघु शोध प्रकल्प के रूप में चुननु का प्रश्न

है, मुझे अपने सैन्य सेवा काल में कई अवसरों पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा आदि में भाग लेने तथा हिंदी अनुवाद कार्य करने का सुअवसर मिला है। इससे हिंदी के प्रति मेरी अभिरूचि बढती गई । साथ ही मै।ने यह भी अनुभव किया कि भारतीय सशस्त्र सेनाओं, विशेंषकर भारतीय नौसेना में राष्ट्रीयकृत बैंको, भारतीय रेलवे तथा अनय सरकारी विभागों के समान ही राजभाषा हिंदी का कार्य बडी ईमानदारी से हो रहा है।

अतएव एक पूर्व नौसैनिक के रूप में नौसेना के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के उद्देश्य से मैंने यह शीर्षक चुना । जहां तक मेरी जानकारीहै, इस विषय पर कुछ ही पत्र-पत्रिकाओं जैसे सैनिक समाचार आदि में सीमित जानकारी उपलब्ध है। इन पत्र-पत्रिकाओं मं राजभाषा हिंदी से संबंधित कुड एक बिन्दुओं को स्पर्श करने का प्रयास अवश्य हुआ है परंतु अब भी भारतीय सशस्त्र सेनाओं मे राजभाषा हिंदी के अनछुए पक्ष को उजागर करने की नितांत आवश्यकता बनी हुई है ।

भारतीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा राजभाषा के क्षेत्र किए गए कायों की काई भी पुस्तक या ठोस जानकारी देनेवाला दस्तावेज उपलब्ध नहीं है । मैने इस लघु शोध प्रकल्प में अपने नौसेनिक जीवन के पंद्रह वर्षो के राजभाषा संबंधी अनुभवों को लिखित सामग्री के रूप में संजोने का प्रयत्न किया है।

आमतौर पर लोगों में यह धारणा है कि भारतीय सशस्त्र सेनाएं केवल युध्दकला में निपुण होती है होती है। इसके अतिरिक्त ये सेनाएं अन्य गतिविधियों मे उदासीन रहती है। जबकि वास्तविकता इससे हटकर है। वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय सशस्त्र सेनाएं विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्रियाकलापों में बढ-चढ कर भाग लेती है। भारतीय सशस्त्र सेनाएं उक्त कार्यो में न केवल पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लेती हैं बल्कि नागरिक प्रशासन तथा आम जनता से जुडे हुए हर मसले को हल करने का सफल प्रयास भी करती हैं।

इस प्रकार आज भारतीय सशस्त्र सेनाएं उच्च शिक्षा को बढाता देने, तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक बनाने, पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम करने, पर्यापरण को संरक्षित करने, स्वास्थ्य तथा चिकित्सा संबंधी विषयों पर लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने आदि में अपना उल्लेखनीय योगदान दे रही है। अतएव प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प भारतीय सशस्त्र सैनिकों द्वारा सामाजिक-शैक्षणिक तथा अन्य क्षेत्रों में किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यो का परिचय नागरिक प्रशासन (आम लागों) से कराने में निश्चय ही एक सशक्त माध्यम सिध्द होगा ।

वर्तमान भारतीय परिवेश में यह देखा जा रहा है कि नवीन पीढी सेना के बजाय 'कॉरपोरेट' क्षेत्र से जुडने में अधिक रूचि ले रही है। ऐसे में श्नई पीढी को सैन्य सेवा के साथ जोडने की नितांत आवश्यकता है। अतः इन परिस्थितियों में यह लघु शोध प्रकल्प जहॉ एक और सैन्य सेवा में संलग्न कार्मिकों के उच्च शिक्षण, तकनीकी ज्ञान तथा राजभाषा संबंधी योगदान को रेखांकित करेगा वहीं दूसरी ओर यह प्रकल्प रूप से हमारी युवा पीढी को भारतीय सैन्य सेवा से जुडने के लिए प्रेरित करेगा ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भारतीय सशस्त्र सेनाओं (मुख्यतः भारतीय नौसेना) द्वारा प्रायोजित शैक्षणिक कार्यो, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा अन्य सामाजिकम कार्यो को नागरिक प्रशासन (जन-सामान्य) के समक्ष प्रस्तुत करने के उद्देश्य से यह लघु शोध प्रकल्प एक महत्वपूर्ण दस्तावेज सिध्द होगा । इसके साथ ही शांतिकाल में भारतीय सशस्त्र सेनाओं तथा नागरिक प्रशासन के अंतःसंबंधो का उद्घाटन करने और दोनों क्षेत्रों के बीच नए संपर्क सूत्र स्थापित करने की दिशा में यह प्रकल्प महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

कुल मिलाकर प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक बनाने में भारतीय सशस्त्र सेनाओं की भूमिका (भारतीय नौसेना के विशेष संदर्भ में) भारतीय सैन्य सेवा एवं भारतीय नागरिक प्रशासन के बीच एक नवीन सेतु का निर्माण करेगा । अतः जन सामान्य में राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने के लिए यह लघु शोध प्रकल्प संजीवनी का कार्य करेगा ।

14. CONTRIBUTION TO THE SOCIETY:

(GIVE DETAILS)

समाज को देन : प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प "राजभाषा हिंदी को व्यावहारिक बनाने में भारतीय सेनाओं की भूमिका" (भारतीय नौसेना के विशेष संदर्भ में) का सामाजिक प्रदेय इस प्रकार है -

- प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प ने सैन्य समाज तथा सिविल सोसायटी को समीप लाने का प्रयास किया है।
- इस प्रोजेक्ट के जरिए सिविल सोसायटी के पाठकों को सेना के विविध पदों (रैंको) की जानकारी प्राप्त होती है।
- सैन्य सेवा की शैक्षणिक तथा भाषिक गतिविधियों से आम पाठक रू-ब-रू हुए है।
- इस प्रोजेक्ट ने सिविल समाज तथा सैन्य समाज के बीच शैक्षणिक तथा भाषिक क्षेत्र में नवीन सेतु का निर्माण किया है।

- प्रस्तुत लघु शोध प्रकल्प इस बात को रेखांकित करता है कि सेना का संबंध केवल 'बंदूक' से नहीं बल्कि 'कलम' से भी है।
- इस प्रोजेक्ट के जरिए नई पिढी के मन में सैन्य सेवा के बारे में जानने की लालसा उत्पन्न हुई है।
- यह प्रोजेक्ट नई पीढी को राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा देता है।
- यह प्रोजेक्ट युवाओं की जिज्ञासाओं का समाधन करते हुए, सैन्य सेवा का अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरित करता है ।

15. WHETHER ANY PH.D. ENROLLED/PRODUCED OUT OF THE PROJECT: No

16. NO. OF PUBLICATIONS OUT OF THE PROJECTS: One
(PLEASE ATTACH RE-PRIENT)

UPADHYAY BHAGWATI PRASAD

(PRINCIPAL INVESTIGATOR)